Date
14/8/20
Friday.

Principles of Sociology

BA Part I H
Paper-1

From—
Dr. Arun Kumar
Reader
Deptt of Sociology
Shivshah College
Sasaram

सामाजिक परिवर्तन के कारण (कारक)
Facters of social change

→ किसी भी परिवर्तन के लिए कुछ न कुछ कारक उत्तरदायी होते है अगर हम किसी परिवर्तन के कारक को जान पाते है तो उससे संबंधित परिणामो के बारे मे सचेत हो जाते है। लुक्रेटियस का कहना है कि वह व्यक्ति ज्यादा सुखी है जो किसी परिवर्तन के कारण को जान लेता है। सामाजिक परिवर्तन के अनगिनत कारक (Factors) है पर विभिन्न कारको की महत्ता देश और काल से प्रभावित होती है। जिन कारणो से आज सामाजिक परिवर्तन हो रहे है उनमे से बहुत से कारक प्राचीन काल मे मौजूद नही थे। परिवर्तन के जिन कारको की महता प्राचीन मध्यकाल मे रही है आज उसकी महता उतनी नही रह गयी है। समय के साथ परिवर्तन का स्वरूप और कारक दोनो बदलते है विभिन्न विद्वानो ने सामाजिक परिवर्तन के लिए विभिन्न कारको को उत्तरदायी माना जैसे मार्क्स ने आर्थिक कारक को, कॉप्ट ने बौद्धिक विकास को, स्पेन्सर ने विभेदीकरण की सार्वभौमिक प्रक्रिया को, वेबर ने धर्म को, सोरोकिन ने संस्कृति को तथा ऑगबर्न ने सांस्कृतिक पिछड़न को सामाजिक परिवर्तन के लिए उत्तरदायी माना है।

→ • इस प्रकार सामाजिक परिवर्तन के लिए निम्नलिखित कारक (Factors) उत्तरदायी ठहराये जा सकते है:-

→ (A) प्राकृतिक या भौगोलिक कारक — Natural or Geographical Factor :- अनेक बार प्रकृति समाज को परिवर्तन की प्रेरणा देती है। उदाहरण स्वरूप जब भूकंप आता है या बाढ़ आती है अथवा अनावृष्टि होती है तब बहुत से परिवार उजड़ जाते है और उनके संबंधो का पता नही चलता। उनके संबंधो मे बहुत बड़ा परिवर्तन आता है। लेकिन प्राकृतिक-कारक समाज मे केवल सहगामी कारको को महत्व ही नही परिवर्तन लाते है। प्राकृतिक कारको के महत्व को स्वीकार करते हुए हटिंग्टन ने कहा है कि ~~जलवायु~~ जलवायु मे परिवर्तन होने से सभ्यता एवं संस्कृति मे परिवर्तन होते है।

→ ~~ग्रलियन हन्सले ने भी~~ जलवायु और भूमि का संबंध सामाजिक परिवर्तन से जोड़ा है।

Scanned by TapScanner

→ (B) जनसंख्यात्मक कारक – जनसंख्या का सामाजिक परिवर्तन में महत्वपूर्ण योगदान है। इस विषय पर सर्वप्रथम चर्चा टी० आर० माल्थम ने 1798 ई में अपने एक लेख Essays on the Principles of Population में किया है, माल्थम का कहना है कि किसी देश की जनसंख्या ज्यामितीय दर से अर्थात 1, 2, 4, 8, 16, 32, जब कि खाद्यान् उत्पादन अंकगणितीय दर से अर्थात 1, 2, 3, 4, बढ़ती है। इससे किसी भी देश की जनसंख्या 25 वर्ष में दुगुनी हो जाएगी।

→ हर समाज में जनसंख्या कभी घटती है तो कभी बढ़ती है कभी एक समान नहीं रहती। जनसंख्या की वृद्धि एवं ह्रास हमारे समाज के आर्थिक एवं सामाजिक जीवन को प्रभावित करता है। जैसे हमारे देश भारत में जनसंख्या में वृद्धि समाज की गरीबी का कारण है। अतः यहां जनसंख्या वृद्धि रोकने की चिंता है जबकि दूसरे देश में जनसंख्या की कमी से समस्याएं उत्पन्न हो रही है जैसे रूस और जर्मनी में। यहां गर्भपात कानूनी अपराध माना जाता है।

→ (C) प्रौद्योगिकीय कारण – वर्तमान समय में सामाजिक परिवर्तन का प्रमुख कारक है। प्रौद्योगिकी ने हमारे समाज में महत्वपूर्ण परिवर्तन लाया है। प्रौद्योगिकी एक ऐसा व्यवस्थित ज्ञान होता है जिसके द्वारा यंत्रों एवं उपकरणों का प्रयोग संभव हो पाया है। जैसे टाइपराइटर प्रौद्योगिकी नहीं है बल्कि टाइप करने की कला को प्रौद्योगिकी कहा जाता है।

थार्सटीन वेब्लन ने अपने परिवर्तन संबंधी विचार में मनुष्य को अपनी आदतों द्वारा नियंत्रित माना है। वेब्लन को प्रौद्योगिकी निर्धारणवाद का समर्थक माना जाता है इनका कहना है कि मनुष्य वही है जो कुछ करता है जैसा वह कार्य करता है वैसा ही अनुभव और विचार भी करता है।

→ (A) आर्थिक कारक (Economic Factores) मार्क्स का कहना है कि समाज में परिवर्तन सिर्फ आर्थिक कारकों के द्वारा होता है। उनका कहना है कि आर्थिक आधार पर समाज में दो वर्ग बनते रहे हैं जैसे कि वर्तमान समय में हमारे सामने दो वर्ग हैं, पहला – पूँजीपति वर्ग (बुर्जुआ) और दूसरा मजदूर वर्ग (सर्वहारा) इसलिए मार्क्स के सामाजिक परिवर्तन संबंधी विचार को आर्थिक निर्धारण वाद कहा जाता है। — 3

Scanned by TapScanner

→ (E) सांस्कृतिक कारक – (Cultural factor) सांस्कृतिक कारक भी सामाजिक परिवर्तन के लिए उत्तरदायी है। हमारे आदर्श जीवन की विशाल धर्म ग्रन्थ संस्थाएं रूढ़िया आदि हमारे सांस्कृतिक जीवन की प्रतिविंब है। आगबर्न के अनुसार भौतिक व अभौतिक दोनो संस्कृतियों मे परिवर्तन आने से सामाजिक परिवर्तन आता है।

→ (F) वैचारिक कारक – Ideological Factors – विचार एवं विचार धाराएं भी सामाजिक परिवर्तन लाने मे महत्वपूर्ण भूमिका निभाते है किसी समस्या के हल के लिए समाज – शास्त्रीय नवीन विचार प्रस्तुत करते है। वैचारिक परिवर्तन प्रथाओ रीति रिवाजो संस्थाओ एंव कानून मे भी परिवर्तन लाता है।

→ (G) मनोवैज्ञानिक कारक – (Psychological Factors) सभ्यता की प्रगति के साथ ही सामाजिक परिवर्तन मे मनोवैज्ञानिक कारको का महत्व बढ़ता जा रहा है। परिवर्तन मनुष्य की प्रकृति मे निहित है। मनोवैज्ञानिको ने मनुष्य की प्रकृति को जिज्ञासा की मूल प्रकृति कहकर पुकारा है ~~उनका~~ उनका कहना है कि मनुष्य उसी प्रकृति के कारण नई-नई खोज करता है। और सामाजिक परिवर्तन को प्रोत्साहन मिलता है इस आधार पर कहा जा सकता है कि सामाजिक परिवर्तन का मूल आधार मनोवैज्ञानिक कारक है।

→ (H) राजनीतिक तथा धार्मिक कारक – Politics and Religious Factor.

→ (I) प्राणिशास्त्रीय कारक – Biological Factors – प्राणिशास्त्रीय कारक जनसंख्या के प्रकार को निश्चित करते है अर्थात व्यक्तियो का क्या स्वास्थ्य स्तर होगा यह प्राणिशास्त्रीय कारको द्वारा निश्चित होता है।

• इस प्रकार उपरोक्त कारको के विश्लेषण से – स्पष्ट है – जाता है कि सामाजिक परिवर्तन के लिए उपरोक्त सभी कारक जिम्मेदार है न कि कोई एक विशेष कारक

From –
Dr. Anil Kumar
Reader
Deptt of Sociology
Sheonan College
Sasaram, Rohtas

Date
14/8/20

Scanned by TapScanner